युद्ध विरोधी कविताएं

ISSN 2394-1723
मूल्य : 40 रुपये

वागर्थ

वर्ष 32 अंक 363 फरवरी–2026

राजनीतिज्ञों और साहित्यकारों के बीच संबंध क्यों टूटते गए

विजय बहादुर सिंह नरेश सक्सेना
गोपेश्वर सिंह कर्मेंदु शिशिर गरिमा श्रीवास्तव
अनुज लुगुन (प्रस्तुति : संजय जायसवाल)

कहानियां

दिव्या विजय कैलाश बनवासी
शिवेंदु श्रीवास्तव जयमाला
चंद्रमती (मलयालम) महमूद फलाकी (ईरानी)

भारतीय भाषा परिषद्

ISSN : 2394-1723

वागर्थ

भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका

वर्ष 32, अंक 363, फरवरी 2026

संपादक
शंभुनाथ

प्रबंध संपादक
प्रदीप चोपड़ा

प्रकाशक
डॉ. कुसुम खेमानी

संपादन सहयोग
अंक सज्जा
सुशील कान्ति

ऑनलाइन मल्टीमीडिया संपादक
उपमा ऋचा
upmamcreat@gmail.com

संपादकीय विभाग
36 ए, शेक्सपियर सरणी
कोलकाता–700017
vagarth.hindi@gmail.com
7449503734
(दिन 12 बजे से संध्या 6 बजे)

आवरण
तारक नाथ राय

इस अंक में

साहित्य से आत्मध्वंसक दूरी : **संपादकीय** 5

श्रद्धांजलि : 12

कहानियां

शाखसार : **दिव्या विजय** 17

सही या गलत : **कैलाश बनवासी** 29

उबाल : **शिवेंदु श्रीवास्तव** 39

टिटकी : **जयमाला** 48

आप निगरानी में हैं (मलयालम) : **चंद्रमती**
(अनुवाद : **सुमित पी. वी.**) 53

कविताएं

प्रदीप मिश्र/शिव कुशवाहा/अनुजीत इकबाल/सिद्धार्थ बाजपेयी/अश्विनी कुमार त्रिपाठी/नंदा पांडेय/शुभ्रा ओझा/राजकुमार गीत/चंद्रेश्वर/सुजाता कुमारी/प्रियंका सिंह 59

मलयालम कविताएं :
अक्कितम : अनुवाद : **आरसु** 72

परिचर्चा

राजनीतिज्ञों और साहित्यकारों के बीच संबंध क्यों टूटते गए :
विजय बहादुर सिंह/नरेश सक्सेना/गोपेश्वर सिंह
कर्मेंदु शिशिर/गरिमा श्रीवास्तव/अनुज लुगुन
(प्रस्तुति : **संजय जायसवाल**) 74

विश्वदृष्टि

एक खुशमिजाज वृद्ध जर्मन महिला से छोटी-सी गुफ्तगू :
महमूद फलाकी : (अनुवाद : **श्रुति जैन**) 106

समीक्षा संवाद

उपन्यास : अंधेरे में चीख : **संध्या नवोदिता**
(शंकर, सविता पाठक और भगवानदास मोरवाल की पुस्तकें) 108

सोशल मीडिया 118

विविध

पाठक संसद/किताबें 120

लघुकथा

बुद्धिमान : **उमाकांत भारती** 38

देश-देशांतर

नरेश मेहता/पाब्लो नेरूदा (स्पानी)

मल्टी मीडिया

सीताकांत महापात्र की **प्रेम कविता :**
स्वर **: अनुपमा ऋतु**

आवरण चित्र साभार : **कमल कोरिया**

कविताओं में रेखांकन :
आस्था

वागर्थ **सदस्यता और बिक्री संपर्क**

एक प्रति : 40/-
सामान्य वार्षिक सदस्यता (डाक व्यय सहित) : 450 रुपये
वार्षिक सदस्यता (रजिस्टर्ड डाक) 450+510 = 960 रुपये
त्रैवार्षिक सदस्यता : 1350 रु.। रजिस्टर्ड डाक से = 2900/-
आजीवन : 10,000 रुपये/**(साधारण डाक)** विदेश : **वार्षिक** : 80 डॉलर
भारतीय भाषा परिषद के नाम से चेक या ड्राफ्ट भेजें

एजेंसियों और सदस्यों द्वारा चेक से भुगतान Bharatiya Bhasha Parishad के नाम या Neft द्वारा : Kotak Mahindra Bank, Branch : Loudon Street, A/c no. 8111974982, IFSC Code KKBK0006590 पर भुगतान करें।
भुगतान के बाद एस एम एस या व्हट्सअप कर दें 8910269814 : **मीनाक्षी दत्ता**
जानकारी : कार्यालय के दिन दोपहर 12 बजे से संध्या 6 बजे तक
समय पर भुगतान करने वाली एजेंसियों को ही हम भविष्य में पत्रिका भेज पाते हैं।

● प्रकाशित रचनाओं से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
© सर्वाधिकार सुरक्षित
● वागर्थ से संबंधित सभी विवाद कोलकाता न्यायालय के अधीन होगा।

● वेबसाइट : **www.bharatiyabhashaparishad.org**

वागर्थ प्रबंध प्रभार **: मीनाक्षी दत्ता**
वितरण तथा अन्य कार्य **: अशोक बारीक, बैद्यनाथ कामती, खेत्राबासी बारीक, संतोष सिंह, प्रदीप नायक, प्रेम नायक**

आप क्यू आर कोड स्कैन करके भी **भारतीय भाषा परिषद** के नाम भुगतान कर सकते हैं। भुगतान करने के बाद मोबाइल नंबर सहित संपूर्ण विवरण भेज दें।

संपादकीय

साहित्य से आत्मध्वंसक दूरी

21वीं सदी में राजनीतिज्ञों, व्यापारियों, तकनीकविदों आदि की साहित्य से दूरी एक आम दृश्य है। तीनों किस्म के लोग तुरंत लाभ वाले मॉडल पर चलते हैं, जबकि साहित्य सोचने के लिए समय, संवेदनशीलता और दीर्घकालिक दृष्टि की मांग करता है। देखा जा सकता है कि इन दिनों राजनीतिक दृष्टि से क्षमतावानों और शिक्षित-संपन्न मध्यवर्ग द्वारा साहित्य की उपेक्षा बढ़ती जा रही है। इस घटना से देश-दुनिया की कितनी अधिक भावनात्मक क्षति हो रही है, इसपर विचार करने की जरूरत है।

साहित्य हमें एक भाषा ही नहीं देता हमें स्मृति, करुणा और सौंदर्यबोध भी प्रदान करता है। इसलिए साहित्य से विमुख राजनीति एक सामाजिक क्षय है। राजनीति, व्यापार और तकनीक के संसारों के नेता अब साहित्य को निरर्थक वस्तु समझते हैं। 60-70 साल पहले यह स्थिति नहीं थी, साहित्य पढ़ने-पढ़ाने और लिखने वालों की प्रतिष्ठा थी। लेखक अपना सिर ऊंचा रख पाते थे। प्राचीन काल में ऋषि या कवि आते थे, राजा उठ खड़ा होता था। इन दिनों साधारण मंत्री-विधायक आता है, लेखक खड़ा हो जाता है। कई बुद्धिजीवी और कलाकार राजनीतिक सीढ़ी खोजते रहते हैं। यह दोतरफा पतन है, जिसे समझना चाहिए।

जिस देश-समाज में स्मृति, करुणा, सौंदर्यबोध– एक तरह से भाषा का ध्वंस हो जाता है उसमें राजनीति हमेशा सत्ता प्रबंधन, भावनात्मक हेरफेर और भीड़ के उन्माद में सिकुड़ जाती है। मनुष्य मतदाता में सीमित हो जाता है। जटिल समस्याएं तात्कालिक नारों से ढक जाती हैं। संवाद आरोप-प्रत्यारोप में अवरुद्ध हो जाता है। साहित्य से दूरी के कारण भाषा सोचने का औजार न होकर हमला करने की मिसाइल होती है। हम राजनीति ही नहीं बाजार और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के संसार में भी देख सकते हैं कि इनका मानव बुद्धि पर कैसा तेज आक्रमण है।

साहित्य से दूरी आत्मध्वंस की ओर ले जाता है। हम इधर 'आत्मज्ञान', 'आत्मसचेतनता', 'आत्मसंघर्ष' आदि के युग से 'आत्मध्वंस' के युग में पहुंच